Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
p-ISSN : 2231–167X, Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 03, July, 2017, pp. 335-341

विविध आदर्शों पर विकसित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन

सुमन बलौदा*

प्रस्तावना

जिस चुनौती भरे समय का हम सामना कर रहे है उसमें गुण और मात्रा दोनो दृष्टियों से सक्षम शिक्षा ही राष्ट्रीय विकास, एकता, कल्याण और सुरक्षा के लिए सर्वोपरि सशक्त साधन है । शिक्षा इस प्रकार का सशक्त साधन है कि बुरी शिक्षा शैक्षिक दृष्टि से ही बुरी नहीं अपितु वह चिर–स्थायी क्षती पहुचाँ सकती है । सम्भवतः वर्तमान युग का सबसे महत्वपूर्ण लक्षण यह है कि मानव–इतिहास में पहली बार विश्व विशेषतः विज्ञान और प्रौधागिकी पर आधारित हो गया है । इसका विकास इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि जब तक हम अतीत को समझने का प्रयास करते है तब तक बहुत कुछ नवीन हमारे समक्ष आ जाता है । आज व्यक्ति कुछ वर्षो में ही इतना ज्ञान अर्जित कर लेता है जितना मानव जाति ने पिछली अनेक सदियों में अर्जित किया है ।

हमारा वर्तमान युग औद्योगिक युग से आगे एक नये युग में संक्रमित हो रहा है। यह संक्रमण काल मानव जाति द्वारा उठाये गये खतरों में सबसे अधिक खतरनाक है। किसी भी समय कुछ भी घर कर सकता है । हिरोशिया बम से लाखों गुना भयावह शक्ति वाले न्यूक्लियर बम प्रतिक्षण विस्फोट के लिए तैयार है। आज मनुष्य पहली बार ऐसी स्थिति का सामना कर रहा है जब पूर्ण विध्वंस के लक्षण प्रकट है। मानव इतिहास के इस भयंकर संकटकाल में शिक्षा की भूमिका विशेष रू‍ से महत्वपूर्ण है। आज शिक्षा का जितना महत्व है उतना पहले कभी नही रहा है। यदि हम किसी समाज के मूल्यों का अवलोकन करें तो देखेंगे कि उनका विकास अनेक मानक व्यवहारों के रूप में हुआ है। इन्हे अरोही क्रम में रखा जा सकता है। किसी समूह का मानक स्थापित करते समय कई बातों पर ध्यान दिया जाता है। सबसे प्रथम तो यह कि कोई नैतिक–मूल्य क्या व्यवहारिता उपयोगिता की कसौटी पर सफल होता है। इसे उपयोगितावाद की संज्ञा दी जाती है। इसमें किसी व्यवहार की परीक्षा उसके परिणाम से की जाती है। परिणाम समाज के ज्यादा से ज्यादा लोगो के लिए सुखद है तो उसे अच्छा माना जाता है।

एक तर्क यह भी है कि वस्तुनिष्ठ उपयोगितावाद किसी मूल्य प्रणाली के विकास क्रम में काफी बाद की कड़ी है। इसके आधार पर जो सुझाव और मानक प्रस्तुत किए जाते है उन्हे व्यक्तिगत आवश्यकता या अधिमान्यता के आधार पर तय किए जाने वाले आचार–व्यवहार की तरह सापेक्ष या व्यक्तिपरक सुझाव की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इसी उच्च स्तर परनिर्धारित नैतिक मूल्यों से अच्छे और बुरे के बारे में समग्रता और वस्तुनिष्ठता की अवधारणा तय होती है इसी के आधार पर प्रेम, न्याय और विवके जैसी अवधारणाओं को नैतिक मूल्यों के लिए अपरिहार्य बताया जाता है पर इसमें भी विवाद है। किसी व्यक्ति का 'पूर्ण न्याय' व्यवहार में एक 'सार्वभौमिक अन्याय 'साबित हो सकता है। पुनश्च, प्रायः 'न्याय', 'प्रेम' का शत्रु बन जाता है इसलिए पूर्ण और वस्तुनिष्ठ सहमति से यह कह पाना कठिन हो जाता है कि अमुक कार्य बिल्कुल सही है या कि यह पूरी तरह 'प्रेम' और 'न्याय' दोनो के अनुकूल है।

---

* पुत्री श्री प्रहलाद सिंह बलौदा, (पंजीयन न. 18813002), श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान। निर्देशिका–डॉ इन्द्रिरा अशोक।